प्रभु अपना वचन सदैव निभाता है!
(18:9-22)

सूर्य के चमकने के बावजूद, हवा में ठण्डक थी। अक्तूबर 1989 की बात है हमारा छोटा सा दल अगोरा, जिसे हिन्दी की बाइबल में चौक कहा गया है, के खण्डहरों में एकत्रित हुआ था। मैं गल्लियो के सामने पौलुस का मुकदमा पढ़ने के लिए दूसरों के सामने खड़ा था। मेरे पीछे बिमा, अर्थात पत्थर का वह मंच था जिस पर बैठकर प्रसिद्ध रोमी अधिकारी न्याय करते थे। बिमा के पीछे गगनचुम्बी अक्रो-कुरिन्थ था। मैंने अपना गला साफ़ किया और बोलने लगा: ''जब गल्लियो अखया देश का हाकिम था तो यहूदी लोग एकमत होकर पौलुस पर चढ़ आए, और उसे न्याय आसन के साम्हने ले आए। ...''

जिस यात्री दल के साथ मैं घूम रहा था, वह कुरिन्थुस में, उस जगह पहुंच गया जो पौलुस के असाधारण कामों के लिए प्रसिद्ध है। अपनी तीन मिशनरी यात्राओं के दौरान पौलुस ने दो महानतम नगरों अर्थात कुरिन्थुस और इफिसुस में काम किया था। उसने कुरिन्थुस में कम से कम डेढ़ वर्ष और इफिसुस में दो से अधिक वर्ष बिताए।

हम पहले ही देख चुके हैं कि पौलुस ने भय तथा शंका से जूझते हुए कुरिन्थुस में अपनी सेवकाई का काम आरम्भ किया। पिछले पाठ के अन्त में हमने पौलुस को यीशु द्वारा दर्शन देकर ईश्वरीय आश्वासन देते हुए देखा था। हम इस पाठ को पौलुस को दी गईं प्रतिज्ञाओं और उनके पूरा होने पर ध्यान देते हुए आरम्भ करेंगे। इसमें हमारे लिए यह संदेश है कि प्रभु सदा अपने वचन को निभाता है! आप इस सत्य के सहारे अपने जीवन और आत्मा को दांव पर लगा सकते हैं।

वचन दिया गया: पौलुस को कुछ हानि न होगी (18:9, 10)

प्रभु ने पौलुस को दर्शन देकर पहले यह कहा, ''मत डर, वरन कहे जा, और चुप मत रह'' (आयत 9)। दुर्भाग्यवश, हममें से कई लोग इसलिए नहीं बोलते क्योंकि हमें डर लगता है। यीशु ने पौलुस को आश्वासन दिया, ''क्योंकि मैं तेरे साथ हूं'' (आयत 10क)।

यदि हम इस बात को याद रख सकें, तो इससे उसके बारे में बोलने का हमारा बहुत सा भय दूर हो जाएगा (मत्ती 28:19, 20)।

प्रभु ने फिर पौलुस को दो वचन दिए: एक तो स्पष्ट था और दूसरा समझ आता था। स्पष्ट वचन यह था कि ''कोई तुझ पर चढ़ाई करके तेरी हानि न करेगा'' (आयत 10ख)। इससे ऐसा लगता है कि पौलुस डाह से भरे यहूदियों के आक्रमण से डरता था। शायद उसे यह भी लगा कि कुरिन्थुस में जितनी भलाई वह कर सकता था, उसने कर ली थी और अपने शत्रुओं को अपने साथ दुर्व्यवहार करने का अवसर देने से पहले वहां से निकल जाने पर विचार कर रहा था। भारी दबाव के बीच दृढ़ विश्वास वाले लोग भी डगमगा सकते हैं। परन्तु, मसीह ने पौलुस से एक वायदा किया, कि बेशक उसे दूसरे नगरों में हानि उठानी पड़ी हो, परन्तु कुरिन्थुस में उसे कोई हानि नहीं होगी।

यीशु के शब्दों में, इस वायदे के साथ एक और वायदा था ''क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत से लोग हैं'' (आयत 10ग)।[1] इस वायदे का सम्बन्ध परमेश्वर की उस प्रतिज्ञा से है कि वह ''अन्यजातियों में से अपने नाम के लिए *एक लोग* बना'' लेगा (15:14) परमेश्वर को, जो मनुष्य के हृदय को जानता है, पता था कि कुरिन्थुस में यदि लोगों को अवसर दिया जाए तो वे सुसमाचार को ग्रहण करके उसकी ओर लौट आएंगे।[2] वास्तव में, यीशु पौलुस को कह रहा था कि यदि वह नगर में रहकर प्रचार करता रहे तो बहुत से लोग बपतिस्मा लेंगे।[3] (इसमें कोई संदेह नहीं कि प्रभु भी हमें बता सकता है कि हमारे नगरों तथा क्षेत्रों में उसके ''बहुत से'' लोग हैं परन्तु उन्हें उसके बारे में तब तक पता नहीं चलेगा जब तक हम नहीं बताते!)

यीशु के आश्वासन से पौलुस की चिन्ता भविष्य की तैयारी करने में बदल गई। ''सो वह उनमें परमेश्वर का वचन सिखाते हुए डेढ़ वर्ष तक रहा'' (आयत 11)। हम नहीं जानते कि यह डेढ़ साल का समय उसके वहां पहले रहने के समय के अलावा था या नहीं। न ही हमें यह पता है कि आयत 18 में (''बहुत दिन'') का समय इन अठारह महीनों के अलावा था या नहीं।[4] तथापि, हम यह कह सकते हैं, कि पौलुस ने कुरिन्थुस में, जिसमें कलीसिया के स्थापित होने की बहुत कम सम्भावनाएं थीं, *कम से कम* डेढ़ वर्ष का समय बिताया। यह उसकी तीन यात्राओं के दौरान एक स्थान पर बिताया जाने वाला दूसरा सबसे लम्बा समय था। जहां बहुत सा बीज बोना हो वहां शायद भूमि परीक्षण के लिए बहुत सा समय देना पड़ता है!

वचन निभाया गया:
पौलुस को कुछ हानि न हुई! (18:12-18)

आमतौर पर परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं वर्षों बाद पूरी होती हैं। इस घटना में, वायदा तुरन्त पूरा किया गया। अगली आयत में, लूका ने दिखाया कि कैसे परमेश्वर ने एक मूर्तिपूजक द्वारा काम करके अपने वचन को निभाया।

''जब गल्लियो अखया देश का हाकिम था तो यहूदी लोग एका करके[5] पौलुस पर चढ़

आए, और उसे न्याय आसन के साम्हने लाकर, कहने लगे'' (आयत 12)। अपनी तीन यात्राओं में पौलुस जिन रोमी अधिकारियों से मिला, गल्लियो उनमें सबसे महत्वपूर्ण था। गल्लियो का भाई प्रसिद्ध स्तोईकी दार्शनिक सिनिका, नीरो का शिक्षक था। कई राजकीय लेखकों[6] ने उसका उल्लेख एक प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में किया था। डेलफी में मिले एक शिलालेख के कारण हम कुरिन्थुस में गल्लियो के हाकिम बनने की तिथि जुलाई सन 51 तय कर सकते हैं।[7]

ध्यान दें कि यहूदी लोग अन्य नगरों की तरह पौलुस को नगर के हाकिमों के सामने नहीं, बल्कि समस्त अखया के राज्यपाल के सामने लाए।[8] गल्लियो जैसे शक्तिशाली आदमी का विपरीत फैसला सभी दूसरे रोमी राज्यों के लिए एक मिसाल बन जाता। यह घटना वैधानिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से बहुत महत्वपूर्ण है।

बहुत से लोगों का मत है कि यहूदी लोग गल्लियो के सामने पौलुस को तब लाए जब यह रोमी अधिकारी पहली बार कुरिन्थुस में आया। यदि यह बात सही है, तो शायद उनका ख्याल था कि गल्लियो वहां के स्थानीय लोगों के साथ सम्बन्ध बनाने में दिलचस्पी लेगा और वहां के बहुत से नागरिकों के विरोध से प्रभावित हो जाएगा। उन्हें गल्लियो की ईमानदारी दिखाई नहीं दी।

आयत 12 कहती है कि यहूदी लोग पौलुस को ''न्याय आसन के साम्हने'' लेकर आए। ''न्याय आसन'' शब्द का अनुवाद यूनानी शब्द *बिमा* से किया गया है। बिमा कुरिन्थुस में अगोरा के केन्द्र के निकट ऊंचे मंच को कहते थे, जो संगमरमर के पत्थर से बना हुआ था। इसका इस्तेमाल भाषण देने तथा विभिन्न सार्वजनिक कार्यक्रमों के लिए किया जाता था।[9] परन्तु, मुख्यत: बिमा वह जगह थी जहां कचहरी लगती थी।

पुराने कुरिन्थुस में आज भी बिमा है। इसके नीचे नीले और सफ़ेद संगमरमर लगाकर इसे सुरक्षित रखा गया है। बिमा के सामने एक छोटा खम्भा है जहां आरोपी को खड़ा किया जाता था। पौलुस की तस्वीर उस खम्भे के साथ खड़े हुए बनाएं, शायद उसे इसके साथ बांधा गया है, उसका भविष्य अब गल्लियो के हाथों में है।

हमें यह नहीं बताया गया कि यहूदी लोग ''[पौलुस को] उसे न्याय आसन के साम्हने'' कैसे लाए। हो सकता है कि वे उसे वहां खींच कर लाए हों (16:19); शायद न्यायालय की ओर से उसे सम्मन जारी कर बुलाया गया हो। जब सभी लोग पहुंच गए, तो यहूदियों ने हाकिम के सामने उस पर आरोप लगाए: ''कि यह लोगों को समझाता है, कि परमेश्वर की उपासना ऐसी रीति से करें, जो व्यवस्था के विपरीत है'' (18:13)। कई लोगों के विचार में ''व्यवस्था'' मूसा की व्यवस्था को कहा गया,[10] कइयों के विचार से यहां यहूदियों के कहने का भाव रोमी व्यवस्था से है। यदि उनका कहने का तात्पर्य मूसा की व्यवस्था से था, तो उनका तर्क था कि यहूदी धर्म ''वैध धर्म''[11] था, इसलिए यहूदियों को सुरक्षा प्रदान करने का वायदा किया गया था और पौलुस को उनको परेशान करने से रोका जाना चाहिए। यदि वे रोमी व्यवस्था की बात कर रहे थे, तो यहूदी लोग मसीहियों पर एक अवैध धर्म को उत्साहित करने का आरोप लगा रहे थे, जिसकी रोम को सुरक्षा

नहीं करनी चाहिए थी। उनका तर्क था कि कैसे भी हो, पौलुस और सभी मसीही लोग रोमी सरकार द्वारा दण्ड पाने के अधिकारी थे।

उस समय, अविश्वासियों को लगा होगा कि परमेश्वर का वायदा पक्का नहीं है। प्रभु ने पौलुस को बताया था कि ''कोई तुझ पर चढ़ाई करके तेरी हानि न करेगा,'' परन्तु यहां तो, उस पर चढ़ाई हो गई थी। फिर, दूसरे किसी भी शहर में जब यहूदियों ने पौलुस के विरुद्ध अपने प्रभाव का इस्तेमाल करने का फैसला किया तो वह बड़ी मुश्किल से अपनी जान बचाकर निकला था (13:50; 14:5, 6, 19; 16:19-24; 17:6-10, 13)। पौलुस यहां से भी बचकर कैसे निकल सकता था?

आयत 14 आरम्भ होती है, ''जब पौलुस बोलने पर था, ...।'' पौलुस उन आरोपों को निराधार सिद्ध करने के लिए तैयार था; सम्भवत: वह गल्लियो को सुसमाचार बताने की योजना भी बना रहा था (देखिए प्रेरितों 22; 23; 24; 26)। परन्तु, इससे पहले कि वह कुछ कह पाता, हाकिम बोल पड़ा:

> गल्लियो ने यहूदियों से कहा; हे यहूदियो, यदि यह कुछ अन्याय या दुष्टता की बात होती तो उचित था कि मैं तुम्हारी सुनता। परन्तु यदि यह वाद-विवाद शब्दों, और नामों,[12] और तुम्हारे यहां की व्यवस्था के विषय में है, तो तुम ही जानो; क्योंकि मैं इन बातों का न्यायी बनना नहीं चाहता (आयतें 14ख, 15)।

यहूदियों के साथ पौलुस की बार-बार की लड़ाई में यह पहली बार था, कि उसके शत्रुओं का सामना किसी ईमानदार रोमी अधिकारी से हुआ, जिसे वे धमका नहीं सकते थे।[13] हो सकता है कि गल्लियो यहूदी व मसीही धर्म के मूल मतभेदों के बारे में उलझन में हो, परन्तु वह इस बात को समझता था कि पौलुस और यहूदियों के बीच जो भी झगड़ा हो, वह उसके अधिकार क्षेत्र में नहीं था। यदि यहूदी उसे रोमी व्यवस्था के आधार पर न्याय करने के लिए कह रहे थे,[14] तो उसे पता था कि समस्या उनकी अपनी व्यवस्था के विषय में थी। वह इस मामले को न्यायालय से बाहर फेंकने में नहीं हिचकिचाया।

उन आश्चर्यचकित यहूदियों के अचम्भे की कल्पना करें जब गल्लियो ने अपने अधिकारियों को न्यायालय खाली करने का आदेश दिया। जो वहां से भागे नहीं होंगे उन्हें डंडे का स्वाद चखना पड़ा होगा।[15] इस प्रकार गल्लियो ने ''उन्हें न्याय आसन के साम्हने से निकलवा दिया'' (आयत 16)।

लूका ने विडम्बना की एक टिप्पणी जोड़ दी: ''तब सब लोगों ने आराधनालय के सरदार सोस्थिनेस को पकड़ कर न्याय आसन के साम्हने मारा'' (आयत 17क)। लूका ने पहले ''आराधनालय के सरदार क्रिसपुस'' के मनपरिवर्तन के बारे में बताया था (आयत 8); स्पष्टत: सोस्थिनेस ने पौलुस की जगह ले ली थी।[16] सोस्थिनेस को सम्भवत: इसलिए मारा गया होगा क्योंकि, यहूदियों के नेता के रूप में, वह पौलुस के विरुद्ध आरोप लगाने में उनका प्रवक्ता था।

शास्त्र में यह स्पष्ट नहीं किया गया कि वे ''लोग'' कौन थे जिन्होंने सोस्थिनेस को पीटा। कुछ प्राचीन लेखों से संकेत मिलता है कि ''यूनानियों ने'' उसे पीटा (देखिए KJV)। यदि ऐसा है, तो ये सम्भवत: अगोरा[17] के आस-पास घूमने वाले गुण्डे थे जिन्हें यहूदियों के प्रति अपनी नापसन्दगी को दिखाने का मौका मिल गया। प्रामाणिक हस्तलेखों में केवल ''लोगों'' का प्रमाण है, जिसमें ''लोगों'' शब्द से अभिप्राय यहूदी लोगों से है (पद 14-16)। क्या यह हो सकता है कि यहूदी यह सोचकर कि यदि उनका नेता मामले को सही ढंग से निपटाता तो उन्हें परेशानी न होती, उस पर झपट पड़े।

अगले शब्द और भी महत्वपूर्ण हैं: ''परन्तु गल्लियो ने इन बातों की कुछ भी चिन्ता न की'' (आयत 17ख)। इसका अर्थ आम तौर पर यह लिया जाता है कि गल्लियो एक निर्दोष व्यक्ति की पिटाई के बारे में उदासीन था जो कि बाइबल के बाहर के लेखकों द्वारा दर्शाये उसके व्यक्तित्व से मेल नहीं खाता।[18] शायद ''इन बातों'' का सम्बन्ध सोस्थिनेस की पिटाई से नहीं, बल्कि यहूदियों द्वारा पौलुस के विरुद्ध लगाए गए आरोपों से था। विलियम बार्कले ने सुझाव दिया कि ''सही अर्थ यह है कि [गल्लियो] बिल्कुल निष्पक्ष था और उसने [उस यहूदी शिष्टमण्डल से] प्रभावित होने से इन्कार कर दिया।''

आयत 17 का सही अर्थ जो भी हो, घटनाओं की यह शृंखला चौंकाने वाली थी। पौलुस को न केवल बिना हानि पहुंचाए छोड़ दिया, बल्कि उसे निर्दोष भी ठहराया गया।[19] जिन यहूदियों ने उसे दण्ड देने लिए षड्यन्त्र रचा था, उन्हें ही दण्ड मिल गया। परमेश्वर ने उच्च रोमी अधिकारी को ऐसे स्रोत के रूप में इस्तेमाल कर जिसकी कभी अपेक्षा नहीं थी, अपने वायदे को पूरा किया!

रिक ऐचले द्वारा सुझाव दिया गया है कि गल्लियो के सामने पौलुस के वैधानिक तौर पर निर्दोष प्रमाणित होने के कारण ''कलीसिया को दस वर्ष तक चैन रहा।'' जैसे गल्लियो के सामने पौलुस का दोषी होना दूसरे इलाकों के लिए एक वैधानिक उदाहरण बन जाना था, उसी प्रकार उसका निर्दोष छूटना भी एक उदाहरण बन गया। कई वर्षों तक पौलुस को दण्ड देने के लिए यहूदियों ने दोबारा रोमी अधिकारियों को प्रभावित करने का प्रयास नहीं किया।

इस मुकदमे के बाद, ''पौलुस बहुत दिन तक वहां रहा'' (आयत 18क)।[20] लूका ने इन ''बहुत दिनों'' में पौलुस द्वारा किए गए काम का विस्तार से वर्णन नहीं किया, परन्तु हम आश्वस्त हो सकते हैं कि प्रभु का दूसरा वायदा भी पूरा हुआ: पौलुस के प्रचार करने तथा शिक्षा देने से बहुत से और लोग मसीही बन गए।

सम्भावना है कि आराधनालय का हाकिम सोस्थिनेस जिसकी पिटाई हुई थी, इनमें से एक था। पौलुस ने कुरिन्थुस में मसीहियों के नाम लिखे अपने पहले पत्र में सोस्थिनेस नाम के एक सहकर्मी का उल्लेख किया जिसे स्पष्टतया कुरिन्थी लोग जानते थे। यह अनुमान लगाना दिलचस्प होगा कि सोस्थिनेस की पिटाई के बाद पौलुस और क्रिसपुस उसे मिलने गए ताकि उसके घावों को धोएं और उसे यीशु के विषय में बताएं परन्तु हमें इस प्रकार के विचारों को केवल अनुमान के रूप में ही लेना चाहिए।[21]

निश्चय ही हम कुरिन्थुस में एक और अद्‌भुत मसीही के बारे में जानते हैं। बाद में, जब पौलुस ने कुरिन्थुस से रोम के नाम पत्र लिखा तो उसने यह अभिवादन जोड़ा: ''इरास्तुस जो नगर का भण्डारी है का, तुमको नमस्कार'' (रोमियों 16:23)। कुरिन्थुस में न केवल प्रभावशाली यहूदियों ने, बल्कि प्रभावशाली रोमियों ने भी मसीह को ग्रहण कर लिया था![22] इस अधिकारी से सम्बन्धित कुरिन्थुस के खण्डहरों में एक असाधारण खोज हुई है। कुरिन्थुस के भव्य थियेटर के सामने फर्श पर एक पत्थर लगा था जिस पर लिखा था ''इरिस्तुस ने अपने भण्डारीपन[23] को ध्यान में रखते हुए, यह फर्श अपने खर्चे से बनवाया।'' मूलत: नक्काशी के अक्षरों को कांस्य में सिक्के से भरा गया था। आज केवल खाली अक्षर बचे हैं, परन्तु आसानी से पढ़े जाते हैं।

''बहुत दिन'' के उस समय में पौलुस ने सारे अखया में कलीसियाएं स्थापित करते हुए कुरिन्थुस के आस-पास के क्षेत्र में सुसमाचार का प्रचार करना जारी रखा होगा।[24] सम्भवत: इसी समय 2 थिस्सलुनीकियों भी लिखा गया होगा।[25] यहूदियों और रोमी अधिकारियों से बेख़ौफ़ और सुसमाचार को मानने वालों के बढ़ने की आशीष के साथ जब पौलुस उस क्षेत्र में काम करता जा रहा था, तो कितनी बार यीशु के वायदों की ओर उसका ध्यान गया होगा और कितने आश्चर्यजनक ढंग से वे पूरे हो रहे थे!

आयत 18 के अन्त में, लूका एक छोटी सी अज्ञात टिप्पणी की ओर ले आता है: ''फिर [पौलुस ने] किंख्रिया में इसलिए सिर मुण्डवाया क्योंकि उसने मन्नत मानी थी।'' विद्वान बहुत देर से यह जानने को व्याकुल हैं कि वह मन्नत क्या थी अर्थात पौलुस ने क्या किया और क्यों किया।[26] लूका ने हमें इन बहुत से प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए पर्याप्त जानकारी नहीं दी, परन्तु हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि जो कुछ पौलुस ने किया, वह उसने *क्यों* किया। परमेश्वर के सामने मन्नत मानने का बहुत साधारण कारण उसका अलौकिक ढंग से छुटकारे के लिए आभार व्यक्त करना था; इसमें कोई संदेह नहीं कि पौलुस प्रभु को अपने वायदे पूरा करने के लिए ''धन्यवाद'' कह रहा था!

मैं कल्पना करता हूं कि पौलुस ने पूरे अखया में प्रचार करते हुए इस कहानी को इस निष्कर्ष के साथ बताया होगा, कि ''प्रभु हमेशा अपने वचन को निभाता है! जब वह कुछ कहता है तो आप उस पर भरोसा कर सकते हैं!''

सारांश (18:18-22)

18 से 22 आयतें पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा को समेट देती हैं। ''सो पौलुस बहुत दिन तक वहां रहा, फिर भाइयों से विदा होकर ... जहाज़ पर सूरिया को चल दिया'' (आयत 18क)। कुरिन्थुस में अपना काम पूरा करके, पौलुस सीरिया के अन्ताकिया में जाने की योजनाएं बनाने लगा, जहां उसने तीन वर्ष पूर्व सेवा का काम आरम्भ किया था। ''उसके साथ प्रिस्किल्ला और अक्विला थे''[27] (आयत 18ख) जो उसके साथी मसीही, मित्र तथा साथी तम्बू बनाने वाले थे।

क्योंकि केवल प्रिस्किल्ला और अक्विला का ही उल्लेख किया गया था, इसलिए

शायद, पौलुस ने कुरिन्थुस में काम जारी रखने के लिए सीलास और तीमुथियुस को वहीं छोड़ दिया था। प्रेरितों के काम में हमने पिछली बार सीलास के बारे में तब पढ़ा था जब वह कुरिन्थुस में था (आयत 5)। इससे पहले कि यह आदमी हमारी आंखों से ओझल हो जाए, जिसने जेल में पौलुस के साथ प्रार्थना की और भजन गाए थे, हमें पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा में उसके अमूल्य योगदान को स्वीकार कर लेना चाहिए। हम सीलास के अगले काम के बारे में बहुत कम जानते हैं, सिवाय इस तथ्य के कि उसने बाद में पतरस के साथ काम किया (1 पतरस 5:12)। परन्तु हमें पूर्ण विश्वास है कि सीलास प्रभु के विश्वासी सेवक के रूप में काम करता रहा।

पौलुस और उसके साथी किंख्रिया से (आयत 18) चल पड़े जो सरोनिक खाड़ी पर महत्वपूर्ण कुरिन्थी बन्दरगाह थी। बाद में हम किंख्रिया में एक मण्डली के बारे में पढ़ते हैं (रोमियों 16:1), जिसे सम्भवत: कुरिन्थुस में पौलुस के काम के दौरान स्थापित किया गया था। उनका पहला मुख्य पड़ाव इफिसुस था (आयत 19क), जो एशिया के रोमी राज्य की राजधानी था और निश्चय ही पहले भी पौलुस ने इसे अपना गंतव्य स्थान बनाना चाहा था। उस समय परमेश्वर ने उसे एशिया में वचन सुनाने से रोका था (16:6), परन्तु स्पष्टतया वह प्रतिबन्ध उठा लिया गया था। पौलुस ने इफिसुस[28] में थोड़ी देर रहकर बिताए समय से यहूदियों द्वारा वचन को ग्रहण करने की बात को समझ लिया था।

> और आप ही आराधनालय में जाकर यहूदियों से विवाद करने लगा। जब उन्होंने उस से बिनती की, कि हमारे साथ और कुछ दिन रह,[29] तो उसने स्वीकार न किया। परन्तु यह कहकर उन से विदा हुआ, कि यदि परमेश्वर चाहे[30] तो मैं तुम्हारे पास फिर आऊंगा (18:19ग-21)।

पौलुस अक्विला और प्रिस्किल्ला को अपनी वापसी के लिए भूमि तैयार करने के लिए वहीं छोड़ गया (आयत 19ख)।[31] एक और महीने या इससे अधिक समय की यात्रा के बाद उसका जहाज़ अन्तत: फिलिप्पुस सुसमाचार प्रचारक और सूबेदार कुरनेलियुस के गृह नगर कैसरिया में रुक गया (8:40; 10:1; 21:8)। ''तब इफिसुस से जहाज खोलकर चल दिया, और कैसरिया में उतरकर (यरूशलेम को) गया'' (18:22क)। यह कैसरिया में इकट्ठा होने वाली मण्डली या यरूशलेम की कलीसिया की बात हो सकती है।[32] अन्तत: वह ''अन्ताकिया में आया'' (आयत 22ख); कोई संदेह नहीं कि फिर से उसका स्वागत गर्मजोशी से हुआ और एक बार फिर उसने बताया कि यूनान में हमेशा तीन वर्षों के कार्य में परमेश्वर ने उसके और उसके साथियों के द्वारा ''कैसे बड़े-बड़े काम किए थे'' (14:27)। पौलुस ने अवश्य ही कुरिन्थुस में प्रभु द्वारा उसे छुड़ाए जाने की बात बताई होगी। पुन:, मैं कल्पना करता हूं कि पौलुस ने अपने सुनने वालों पर ज़ोर दिया, ''प्रभु अपना वचन हमेशा निभाता है! तुम इसे लिख कर रख सकते हो!''

अन्त में, जिन पाठों का हमने अध्ययन किया, आइए कुछ पल के लिए उन पर

विचार करें। एक शिक्षा यह है कि प्रभु अपने लोगों के साथ रहता है (यशायाह 41:10; इब्रानियों 13:5)। एक और शिक्षा यह है कि यदि हम प्रचार करने और शिक्षा देने में ईमानदार हैं तो प्रभु हमें आशीष देगा (1 कुरिन्थियों 3:6, 7)। निश्चय ही जहां प्रभु ने हमें काम करने के लिए बुलाया है वह जगह कुरिन्थुस के जैसी अनाकर्षक नहीं होगी! तथापि, मुझे आशा है कि जो सबक हमें अतिप्रभावित करता है वह यह है कि प्रभु अपने वचन को सदा पूरा करता है। आप परमेश्वर और उसकी प्रतिज्ञाओं पर भरोसा कर सकते हैं। ये प्रतिज्ञाएं इस प्रकार से हैं:

> और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात उन्हीं के लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं (रोमियों 8:28)।
>
> सो हम इन बातों के विषय में क्या कहें? यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है? (रोमियों 8:31)।

क्या मैं प्रभु और उसकी प्रतिज्ञाओं पर भरोसा कर रहा हूं? क्या आप कर रहे हैं?[33]

पाद टिप्पणियां

[1]कुरिन्थुस में *भावी* अर्थ में परमेश्वर के ''बहुत से लोग'' थे। यह आयत यह नहीं सिखाती कि परमेश्वर ने पहले से ही तय कर लिया था कि किसका उद्धार होगा और किसका नाश होगा। मनपरिवर्तन के जितने भी उदाहरणों को हमने देखा उनमें यह ज़ोर दिया गया है कि हर व्यक्ति को सुसमाचार को स्वीकार अथवा अस्वीकार करने की छूट है। [2]परमेश्वर ने, जो सब कुछ जानता है, शायद भविष्य में झांक कर देख लिया था कि पतरस के प्रचार का क्या प्रत्युत्तर मिलेगा। [3]''बहुत से'' लोगों ने पहले ही बपतिस्मा ले लिया था (आयत 8)। ध्यान दें कि परमेश्वर का पौलुस को सुरक्षा देना केवल उसके भले के लिए नहीं, बल्कि कुरिन्थुस में सुसमाचार को ग्रहण करने वाले लोगों के लिए अर्थात, पौलुस को कुरिन्थुस में रखने के लिए था जहां वह इन लोगों में प्रचार कर सके। [4]आयत 11 सम्भवत: कुरिन्थुस में पौलुस के समय की संक्षिप्त बात है और इसमें और समयों का उल्लेख शामिल है परन्तु यह सम्भावना रह जाती है कि पौलुस का वहां रहना डेढ़ साल से कई महीने अधिक था। [5]यहां पर गलत प्रकार की एकता का उदाहरण है (एक और उदाहरण के लिए, देखिए 5:9)। एकता की बहुत ही आवश्यकता है, परन्तु परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने से अधिक नहीं। [6]इन लेखकों में टैक्टिटस, प्लाइनी, सिनेका और अन्य शामिल हैं। [7]यह तिथि प्रेरितों के काम के कालानुक्रम और 1 तथा 2 थिस्सलुनीकियों के लिखने के समय के बारे में जानने में सहायक है। हम कुरिन्थुस में पौलुस के काम की कुछ सही तिथि सन 50 के पतझड़ से सन 52 की बसन्त ऋतु कह सकते हैं। [8]कुरिन्थुस रोमी राज्य अखया का राजधानी नगर था। [9]यदि पौलुस को अवसर मिलता, तो नि:संदेह वह इस मंच से प्रचार करता। [10]अंग्रेजी अनुवाद NCV में ''हमारी व्यवस्था'' कहा गया है।

[11]*Religio licita.* [12]ऐसा लगता है कि गल्लियो ने यहूदियों और मसीहियों के बीच के झगड़े के बारे में कुछ सुना था। शायद यहूदियों ने, अपने आरोप में विशेष ''शब्दों और नामों'' का उल्लेख किया था। ''शब्दों'' में सम्भवत: ''उद्धार'' और ''पुनरुत्थान'' जैसी बातें होंगी, जबकि ''नामों'' का प्रश्न इस बात के इर्द-गिर्द होगा कि क्या ''यीशु'' वास्तव में ''मसीह'' था भी। [13]यदि गल्लियो को राजनीतिक आश्वासन की आवश्यकता होती, तो उसे यह इस तथ्य में मिल जाता कि उस समय रोम यहूदियों के पक्ष में नहीं था (18:2)। परन्तु, रोम में कैसी भी स्थिति हो, उसने अपनी इच्छा अनुसार शासन किया होगा। [14]मेरे विचार से

आयत 13 में ''व्यवस्था'' रोमी कानून को कहा गया, क्योंकि हाकिम के लिए उसे बनाए रखना आवश्यक था। [15]''परमेश्वर की सहायता से बदलते जीवन'' पाठ में प्रेरितों 16:22, 23, 35, 38 पर नोट्स देखिए। [16]''मत डर'' पाठ में प्रेरितों 18:8 पर नोट्स देखिए। [17]''भले मनों की तलाश'' पाठ में 17:5 पर नोट्स देखिए। [18]यदि इस आयत का यह अर्थ है कि सोस्थिनेस की पिटाई की ''गल्लियो ने ... कुछ भी चिन्ता न की,'' हो सकता है कि उसने इस कार्यवाही में कुछ न्याय की बात देखी हो। शायद उसे लगा कि ''इस अपराध की यह सज़ा उचित है।'' [19]यह सुझाव दिया गया है कि गल्लियो का पौलुस से निष्पक्ष व्यवहार बाद में रोम में उसकी अपील का एक बड़ा कारण होगा (25:11)। [20]पौलुस बहुत सी अन्य जगहों की तुलना में कुरिन्थुस में अधिक देर तक रहा, इसलिए हम कह सकते हैं कि जिन कलीसियाओं के साथ उसने काम किया उनमें सबसे अच्छी तरह वह कुरिन्थुस की कलीसिया को शिक्षा दे सका। फिर, हम 1 कुरिन्थियों को पढ़कर कलीसिया में इतनी सारी समस्याएं पढ़कर चकित हो जाते हैं। एक लेखक ने सही टिप्पणी की कि यदि कुरिन्थुस की कलीसिया को इतनी अच्छी तरह न सिखाया जाता तो उसमें सम्भवत: इससे भी *बुरी* समस्याएं होतीं। हमें याद रखना चाहिए कि इन मसीहियों को कैसे गन्दे नाले से निकालकर लाया गया था।

[21]कुरिन्थुस में, मैंने एक पत्थर पर ''सोस्थिनेस'' उकेरा हुआ देखा। यह नाम इतना प्रचलित था कि हम एक कुरिन्थियों 1:1 में उल्लेखित सोस्थिनेस की पहचान के बारे में हठधर्मी नहीं हो सकते। [22]दूसरा तीमुथियुस 4:20 कुरिन्थुस में एक ''इरास्तुस'' का उल्लेख इस आशय से करता है कि वह पौलुस के साथ गया था। यह वही आदमी हो सकता है। [23]देखिए रोमियों 16:23. [24]2 कुरिन्थियों 1:1 में पौलुस ने ''सारे अखया के सब पवित्र लोगों'' की बात की। हम निश्चित तौर पर जानते हैं कि कुरिन्थुस (2 कुरिन्थियों 1:1) और किंख्रिया (रोमियों 16:1) में मण्डलियां स्थापित हुई थीं और हमने सुझाव दिया है कि एक मण्डली अथेने में स्थापित हुई थी (''महानतम प्रवचनों में से एक'' पाठ में 17:34 पर नोट्स देखिए)। तथापि, पूरे इलाके में और भी बहुत से मसीही होंगे। [25]पृष्ठ 71 पर पाद टिप्पणी क्रम 53 में 1 और 2 थिस्सलुनीकियों के लिखने की तिथि पर नोट्स देखिए। [26]यह आमतौर पर माना जाता है कि यह एक अस्थाई नाज़ीरी मन्नत थी (गिनती 6:1-21), परन्तु उस मन्नत में मन्नत के आरम्भ में नहीं बल्कि अन्त में सिर मुण्डाया जाता था। और, सिर यरूशलेम के बाहर नहीं, बल्कि यरूशलेम के अन्दर मुण्डाया जाता था। पौलुस की मन्नत और उसके साथ की रस्में सम्भवत: यहूदी पृष्ठभूमि से ली गई थीं। स्पष्टतया, पौलुस कुछ निश्चित यहूदी रीतियों को भी मानता रहा जिनसे मसीहियत को आपत्ति नहीं थी और उनसे उसका मान नहीं घटता था (1 कुरिन्थियों 9:20)। पौलुस की इस नीति को और अधिक जानने के लिए अगले भाग में 21:23 पर नोट्स देखिए। [27]ध्यान दें कि रोमियों 16:3 और 2 तीमुथियुस 4:19 की तरह प्रिस्किल्ला का नाम पहले आया है, जिससे सम्भवत: कलीसिया में उसकी अग्रता का संकेत मिलता है। [28]हमें नहीं मालूम कि पौलुस ने इफिसुस में थोड़ा समय क्यों लगाया। कइयों का मानना है कि वह फसह के पर्व के लिए समय पर यरूशलेम में पहुंचना चाहता था। अधिक सम्भावना है, कि जिस जहाज़ पर उसने जाना था उसने पुराना सामान उतारने और नया सामान चढ़ाने के लिए इफिसुस की बन्दरगाह पर केवल कुछ ही दिन ठहरना था। [29]ऐसा आमतौर पर नहीं होता था (ध्यान दें 13:42)। [30]वाक्यांश ''यदि परमेश्वर चाहे तो'' पर, देखिए याकूब 4:13-15 (मत्ती 6:10; रोमियों 1:10; 15:32; 1 कुरिन्थियों 4:19; 16:7; इब्रानियों 6:3 भी नोट करें)। ध्यान दें कि यह परमेश्वर की इच्छा *थी,* क्योंकि पौलुस वापस *आया* (प्रेरितों 19:1)।

[31]सुझाव दिया गया है कि अक्विला और प्रिस्किल्ला ने अपने तम्बू बनाने के उद्यम के लिए इफिसुस में ''एक शाखा कार्यालय'' खोलने की इच्छा जताई होगी। हमें इतना मालूम है कि वे मसीह के काम को आगे बढ़ाने के लिए उस इलाके में कई वर्षों तक रहे (प्रेरितों 18:26; 1 कुरिन्थियों 16:19)। [32]देखिए 8:5; 9:30, 32; 11:2, 27; 13:31; 15:1, 2, 30. [33]यदि यह पाठ प्रवचन के रूप में इस्तेमाल किया जाता है, तो मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38; इत्यादि का इस्तेमाल करते हुए उद्धार के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को शामिल किया जा सकता है। हम ऐसी आयतों में दिए गए वायदों पर भरोसा रखते हैं तो हम उनमें दी गई आज्ञाओं का पालन करेंगे।